अमृतसर में अमृत मिला

महेन्द्र दवे

थोड़े समय पूर्व हमारे परिवार में एक दुखद घटना घटी | इसी दौरान हमें परमात्मा की असीम कृपा दृष्टि का जो अनुभव हुआ उसे बयान करना एवं इसके द्वारा हमारे परम दुःख की घड़ियों में जिन्हों ने भी हमें मदद की, उन सब से थोडा-सा ऋण मुक्त होना इस लेख का आशय है |

गुजरात की ख्यातनाम प्रकाशन संस्था 'गुर्जर प्रकाशन' के आधार स्तंभ, मुद्रणकला के दृष्टिवंत कलाकार, जैसा कि एक स्वजन ने कहा था - जबरन प्यार हो जाए ऐसे शालीन हमारे दामाद श्री रोहित कोठारी, उनकी पत्नी नीता तथा दो युवा पुत्र हरित एवं ध्रुव को लेकर अमृतसर-वाघा सरहद यात्रा पर गए थे | यात्रा एवं फोटोग्राफी के बड़े शौक़ीन ! १५ जनवरी २०१२ रविवार की शाम रोहितभाई , स्वर्ण मंदिर परिसर की ही सराई में परिवार के साथ नास्ता कर, पानी लेने हेतु कमरे के बाहर गए | वहीँ अचानक गिर पड़े | किसीकी आवाज़ आयी, "अरे, कोई गिर गया है" | हरित ने बाहर जाकर देखा तो पिता रोहितभाई को मंदिर के रिसेप्सन में बेंच पर सुलाया हुआ था, पूर्णतया निश्चेत अवस्था में | हरित स्तब्ध रह गया | इसी दौरान वहाँ उपस्थित लोगों ने रोहितभाई की जेब से प्राप्त फोन नंबर से जिनको फोन किया था, वे अमृतसर की विजया बैंक के प्रबंधक श्री इकबालसिंह एवं उनकी पत्नी रजनीबहन दौड़े-दौड़े आए | सब मिलकर रोहितभाई को समीप की गुरु रामदास अस्पताल ले गए | डॉक्टर ने देखते ही कह दिया, 'Sorry, he is no more'! श्री इकबालसिंह ने गाडी के चालक मनीष को पैसे दिए | नाराज - निराश मनीष बिना कुछ कहे, पैसे वहीं छोड़कर, भीगी पलकों के साथ वहाँ से चला गया |

बिल्कुल अनजान जगह में मेरे उन तीन बालकों का क्या हाल हुआ होगा उसकी बात नहीं करनी है | लेकिन ऐसे वज्राघात के समय गहरी निराशा की गर्ता में डूबे हुए मेरे संतानों को करुणामय अमृत का कैसा अनुभव हुआ उसकी बात करनी है |

पिताजी की अकस्मात मृत्यु से स्तब्ध हरित ने दो जगह फोन कर दिए थे | एक अहमदाबाद में उनके चाचा पीयूष कोठारी को और दूसरा मुंबई स्थित अपने मामा अनुपम दवे को | विजया बैंक में कार्यरत पीयूष कोठारी ने रात को ही अमृतसर स्थित बैंक के साथी इकबालसिंह से बात की और उन्हों ने पूरी तरह से मदद का भरोसा दिलाया | इकबालसिंह एवं रजनीबहन अस्पताल से नीता के पास सराई जाकर, कमरा खाली करवा कर, सब परिवारजनों को अपने घर ले गए | अपार ममता से बच्चों को संभाला, माँ-बाप की तरह ढाढस बंधाई | नीता एवं बच्चों के लिए यह ईश्वरीय साक्षात्कार का प्रथम अनुभव था | इसके पश्चात सिंघसाहब और उनकी पत्नी निरंतर इस परिवार के साथ रहे |

अमृतसर में रोहितभाई के देहांत से व्यथित अहमदाबाद के ही कुछ सगे-सम्बंधिओं ने अमृतसर के अपने-अपने संपर्क जीवंत करते हुए अपने दोस्तों को मदद करने हेतु सूचना दी | नीता के ही अपने पडौसी, डॉक्टर अमीन ने तथा हमारे परिवार के इसरो के भाई दिलीप मेहता ने अपने अमृतसर के मित्रों को मदद हेतु याचना की | इसरो, चंडीगढ़ के श्री एम. के. माथुर साहब के संपर्क से श्री अमितभाई माथुर का अमृतसर से फोन आया | केवल हरित के मोबाइल नंबर एवं आधे- अधूरे पते से भी उन्होंने कड़ाके कि ठंडी एवं बरसाती रातमें भगदौड़ करके परिवार का पता लगाया, फोन पर जानकारी भी देते रहे एवं हमें निश्चिंत रहने कि ढाढस बंधाते रहे | १६ जनवरी को अमृतसर से परिवार को रवाना करने तक उनके साथ बने रहे | आगे और भी कुछ काम हो तो नि:संकोच कहने का आग्रह करते रहे |

मुंबई से अनुपम दवे ने १५ कि रात को ही, समाचार मिलते ही समधि श्री वीरेन्द्र याग्निक का संपर्क किया | वीरेंद्रभाई मूलतः इलाहाबाद से लेकिन बरसों से मुंबई स्थित | उन्हों ने अपने उत्तर भारतीय संपर्कों द्वारा जो मदद कि वो भी उतनी ही प्रेरक है |

वीरेंद्रभाई ने भारत विकास परिषद कि अमृतसर शाखा के श्री नागपालजी का संपर्क किया | हालाँकि अहमदाबाद से डॉक्टर अमीन ने पहले ही उनका संपर्क कर लिया था | वीरेंद्रभाई के कहने से फिनान्स कंपनी बोनान्ज़ा कि अमृतसर शाखा के गोयल साहब ने अस्पताल कि सब व्यवस्था कर दी थी | राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत सहकार्यवाह श्री सुरेश भगेरिया ने नीता को अमृतसर में हरेक प्रकार कि सहाय उपलब्ध कराने की व्यवस्था कर दी थी | मुंबई की ही गोरेगांव स्पोर्ट्स क्लब के श्री सतीश अग्रवाल द्वारा किसान पाइप की अमृतसर ऑफिस के प्रबंध निदेशक के साथ बात हुई | उनके लोग भी अस्पताल पहुँच गए | शायद उन्हीं में से एक श्री सोनीभाई ने हरित से कहा, 'मुंबई से फोन आया है, जितने पैसों कि आवश्यकता हो, दे देना |'

इस तरह अमृतसर में बिलकुल अनजाने लोगों कि सहायता से मृतदेह को अस्पताल से प्राप्त करने कि जटिल प्रक्रिया पूरी हुई | शवपेटिका में मृतदेह को लाने में थोड़ी देरी के कारण अमृतसर हवाई-अड्डे से शाम चार बजे की उड़ान निकल गयी | सब कि मेहनत पर पानी फिर गया | त्वरित निर्णय लिया गया कि मृतदेह को शववाहिनी में सड़क द्वारा ही दिल्ली ले जाकर वहीँ से १७ सुबह की उड़ान से अहमदाबाद पहुंचाया जाए | घनघोर रात, भयंकर ठण्ड, ऊपर से बरसात, अनजाने लोग, पंजाबी वाहनचालक और शववाहिनी में आत्मीयजन का निश्चेष्ट देह ! ईश्वर ने नीता एवं बच्चों का कड़ा इम्तहान लिया | चौबीस घंटे की भगदौड़, थकान, अनिश्चितता के पश्चात आठ घंटे का सफर और वो भी निष्प्राण आत्मीयजन के साथ बैठे-बैठे | युवा चालाक कहीं भी रुके बिना सबको सुरक्षित दिल्ली ले आया लेकिन दिल्ली में हवाई-अड्डे का रास्ता उसे मालूम नहीं था|

मुंबई से वीरेंद्रभाई ने अपने दिल्ली स्थित भाई अजयभाई को हर तरह कि मदद करने के लिए सूचित कर दिया था | अजयभाई भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लि. के पूर्व अभियंता एवं पन्द्रह वर्षों से सुन्दरकाण्ड के परम उपासक तथा गायक | सदभाग्य से वे उस समय दिल्ली में उपस्थित थे | इधर अहमदाबाद से भी चार व्यक्ति दिल्ली रवाना होने हेतु निकले | लेकिन दो को ही टिकट मिला | दो टिकट में गुर्जर प्रकाशन के युवा साथी श्री नंदन शाह एवं नीता कि देवरानी श्री लिपि कोठारी, अलग-अलग उड़ान से रात ११ बजे दिल्ली पहुंचे | अजयभाई रात को उन्हें अपने घर ले गए | थोड़े आराम के पश्चात १७ की सुबह करीब ३ बजे वापस हवाई-अड्डा पहुंचे | अजयभाई ने सब के लिए अहमदाबाद की उड़ान के बोर्डिंग पास ले रखे थे | शववाहिनी के आते ही शवपेटिका सहित सब को ६ बजे की उड़ान से रवाना करने की व्यवस्था हो चुकी थी | दिल्ली प्रवेश मार्ग में भटक गयी शववाहिनी को लेने हेतु अजयभाई, उनकी पत्नी कल्पनाबहन, लिपि एवं नंदनभाई करीब ६० कि.मी. तक गए | सब ने ६ बजे की उड़ान पकड़ी और ८ बजे अहमदाबाद पहुंचे |

हमारे रोहिताभाई तो अमृतसर से ही अमृतपंथ जाने के लिए अकेले ही प्रस्थान कर चुके थे | बाकी सब अहमदाबाद आये | हमारा दुःख अकल्प्य है, शब्तातीत है, फिर भी हमें जीवन जीने की प्रेरणा इस प्रकार से मदद करनेवाले दिव्यात्माओं से प्राप्त हुई है | हमारे दुखद समय में कितने जाने-अनजाने लोगोंसे सहायता प्राप्त हुई है ! अमृतसर में हरित के पास आकर, कंधे पर हाथ रखकर पैसे दे जानेवाले सोनीभाई को किसने भेजा होगा ? वे कौन थे ? किसी को पता नहीं | दो-चार बार जम्मू से फोन पर 'मेरी आवश्यकता होने पर इस नंबर पर फोन करना' कहनेवाले अमितभाई कौन थे ? इस प्रकार से ईश्वर की करुणा का जो अनुभव हुआ वही हमारे लिए सही मायने में अमृत का अनुभव है | हमें तो अमृतसर में अमृत मिला !

'रामचरितमानस' की यह पंक्ति याद आती है | दशरथ की मृत्यु पर विलाप करते हुए भरत को समजाते हुए महर्षि वसिष्ठ कहते है-

'सुनहु भरत भावि प्रबल विलाखी कहे मुनिनाथ,
हानि-लाभ, जीवन-मरण, जश-अपजश विधि हाथ !'

- हे भरत ! समझो ! भावि बलवान है | हानि-लाभ, जीवन-मृत्यु, यश-अपयश ये सब विधाता के हाथ है | यह सोच कर धीरज धरो, मनको शांत करो.....

३, साकेत, सेक्टर-२१, गांधीनगर-३८२ ०२१
मोबाइल: ०९३२८९-९२५८५

हिंदी अनुवाद : दिलीप महेता
फ़ोन : (०७९) २६६००७२०